



BACKGROUNDE
Press Information Bureau
Government of India

स्वच्छ आदत से स्वच्छ भारत: एक राष्ट्रीय प्रयास को कायम रखना

फरवरी 10, 2026

स्वच्छता और सफाई सार्वजनिक स्वास्थ्य, गरिमा और जीवन की गुणवत्ता के लिए मूलभूत हैं। बस्तियों में कचरे के प्रबंधन से लेकर सार्वजनिक स्थानों के सम्मान तक, ये प्रथाएं समुदायों के कामकाज और विकास को प्रभावित करती हैं। पिछले कुछ वर्षों में, स्वच्छ भारत मिशन ने स्वच्छता को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में सबसे आगे लाने, व्यवस्थाओं को मजबूत करने, शौचालयों तक पहुंच बढ़ाने और अपशिष्ट प्रबंधन में जनभागीदारी को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाइ है। इस सामूहिक प्रयास ने स्वच्छता को एक व्यक्तिगत मामले से एक साझा नागरिक जिम्मेदारी के रूप में परिभाषित करने में मदद की है।

बुनियादी ढांचा बदलाव को संभव बनाता है, लेकिन इसे बनाए रखने में दैनिक व्यवहार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दीर्घकालिक प्रगति निरंतर अपनाई जाने वाली आदतों पर निर्भर करती है। स्वच्छ आदत से स्वच्छ भारत अभियान इसी बदलाव को दर्शाता है। एकल-उपयोग प्लास्टिक का उपयोग न करना, कूड़ा न फेंकना और थूकना, गीले कचरे के लिए हरे और सूखे कचरे के लिए नीले रंग का उपयोग करके कचरे को अलग-अलग करना, हाथों की स्वच्छता बनाए रखना, शौचालयों का जिम्मेदारी से उपयोग करना और जहां संभव हो, कचरे को कम करना, पुनः उपयोग करना और पुनर्चक्रण करना - ये ऐसे कार्य हैं जिन्हें प्रतिदिन दोहराने से स्वच्छ वातावरण बनता है।

ये आदतें मिलकर सतत स्वच्छता के लिए एक व्यावहारिक ढांचा तैयार करती हैं। ये दर्शाती हैं कि स्वच्छ भारत का निर्माण एक बार के प्रयासों से नहीं, बल्कि निरंतर भागीदारी से होता है, जहां जिम्मेदार व्यवहार दैनिक जीवन का हिस्सा बन जाता है और सामूहिक अभ्यास के माध्यम से प्रगति जारी रहती है।

Say No To Single Use Plastic



Reduce,
Reuse,
Recycle



Use and
Flush



Clean
Hands



7 HABITS OF SWACHHTA

No Littering



No
Littering



No
Spitting



Green – Wet Waste,
Blue – Dry Waste

Source- Ministry of Housing and Urban Affairs

रोजमर्रा के प्रयास, स्थायी बदलाव

नीति और योजना से परे, स्वच्छता प्रयासों का वास्तविक प्रभाव स्थानीय स्तर पर की गई कार्रवाई में झलकता है। आवासीय सड़कों से लेकर शहरी क्षेत्रों तक, ये उदाहरण दर्शाते हैं कि नियमित भागीदारी और सहभागिता से साझा वातावरण में लगातार सुधार कैसे हो सकता है।

कचरे को कला में रूपांतरित करना

दिल्ली स्थित एमसीडी के दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय में, बेकार पड़ी सामग्रियों को एक रचनात्मक कलाकृति में परिवर्तित करके नया उपयोग किया गया है। बच्चों के खेलने के पुराने उपकरणों से निकले पाइप और अनुपयोगी कूड़ेदानों से निकाले गए पहियों का उपयोग करके एक ऐसी कलाकृति बनाई गई है जो अब कार्यालय परिसर में आने वाले आगंतुकों का स्वागत करती है।

गणतंत्र दिवस 2026 पर अनावरण की गई यह पहल दर्शाती है कि कैसे कचरे के रूप में माने जाने वाले पदार्थों को सोच-समझकर पुनः उपयोग करके सार्वजनिक स्थानों में पुनः शामिल किया जा सकता है। निपटान को डिज़ाइन में बदलकर, यह परियोजना पदार्थों के जीवन को बढ़ाने के महत्व को उजागर करती है और साथ ही सार्वजनिक स्थानों में दृश्य आकर्षण भी पैदा करती है।

यह स्थापना दर्शाती है कि कैसे संसाधन-जागरूक विकल्प, जब नियमित योजना में एकीकृत किए जाते हैं, तो व्यापक अपशिष्ट न्यूनीकरण प्रयासों का समर्थन कर सकते हैं। यह इस बात का एक उदाहरण है कि कैसे स्वच्छ आदत से स्वच्छ भारत को उन दैनिक निर्णयों के माध्यम से साकार किया जा सकता है जो पुनः उपयोग, जिम्मेदारी और नवाचार को प्राथमिकता देते हैं।



उत्तर प्रदेश में स्वच्छ भारत के कार्यों का प्रदर्शन

उत्तर प्रदेश के परेड ग्राउंड में स्वच्छ भारत मिशन की झांकी ने इस बात को उजागर किया कि एकीकृत प्रणालियों और नागरिक भागीदारी के माध्यम से दैनिक स्वच्छता प्रथाओं को कैसे मजबूत किया जा रहा है। इस प्रदर्शनी में घर-घर से कचरा संग्रहण, स्रोत पर ही उसका पृथक्करण, स्वच्छ सारथी क्लबों की भूमिका, प्लास्टिक-मुक्त पहल, 1533 टोल-फ्री हेल्पलाइन और स्वच्छ सार्वजनिक शौचालयों के रखरखाव को दर्शाया गया। इस प्रदर्शनी ने स्पष्ट रूप से दिखाया कि स्वच्छ आदत से स्वच्छ भारत किस प्रकार स्वच्छ सार्वजनिक स्थानों को सुनिश्चित करने वाली नियमित प्रथाओं में परिलक्षित होता है।



शहरी अपशिष्ट प्रबंधन चुनौतियों का समाधान

बंगलुरु में, एक अलग तरह की चुनौती ने लोगों को एकजुट किया। फेंके गए सोफे के कचरे की बढ़ती समस्या ने पेशेवरों के एक समूह को सहयोग करने और व्यावहारिक, सामुदायिक-आधारित समाधानों के माध्यम से इस मुद्दे को हल करने के लिए प्रेरित किया। भारी कचरे के जिम्मेदारीपूर्ण प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करके, इस पहल ने दिखाया कि कैसे लक्षित प्रयास विशिष्ट शहरी स्वच्छता चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान कर सकते हैं।

चेन्नई में, लैंडफिल अपशिष्ट पुनर्चक्रण के क्षेत्र में काम कर रही टीमों ने दिखाया है कि कैसे प्रक्रिया-उन्मुख प्रयास डंपिंग स्थलों पर दीर्घकालिक बोझ को कम कर सकते हैं। उनका काम अपशिष्ट प्रबंधन संबंधी चिंताओं को दूर करने में नियमित आगीदारी और प्रणाली-स्तरीय सोच के महत्व को उजागर करता है।

आजमगढ़ में तमसा नदी का पुनरुद्धार

उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में, एक सामुदायिक पहल ने तमसा नदी को नया जीवन दिया है, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संस्कृति में गहराई से समाझ हुई है। अयोध्या से निकलकर गंगा में विलीन होने वाली तमसा नदी कभी स्थानीय निवासियों के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग थी। हालांकि, समय के साथ प्रदूषण, गाद, कचरा जमाव और उपेक्षा ने इसके प्राकृतिक प्रवाह को बाधित कर दिया, जिससे इसकी पारिस्थितिक स्थिति और समुदाय में इसकी भूमिका दोनों ही धूमिल हो गई।

नदी के महत्व को समझते हुए, स्थानीय निवासी इसे पुनर्जीवित करने की साझा जिम्मेदारी की भावना के साथ एकजुट हुए। इस पहल का मुख्य उद्देश्य नदी तल की सफाई, कचरा हटाना और इसके किनारों को पुनर्जीवित करना था। नदी के किनारों पर छायादार और फलदार पेड़ लगाए गए, जिससे क्षेत्र को स्थिर करने के साथ-साथ इसकी पर्यावरणीय गुणवत्ता में भी सुधार हुआ।

सामूहिक प्रयास और नागरिक कर्तव्य की भावना से प्रेरित होकर, जीर्णोद्धार कार्य ने धीरे-धीरे नदी के प्रवाह को पुनर्जीवित कर दिया। तमसा का पुनरुद्धार दर्शाता है कि कैसे निरंतर प्रयास, जो आदत और स्थानीय स्वामित्व पर आधारित होते हैं, एक स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण में योगदान करते हैं।



जम्मू-कश्मीर में स्वच्छता के लिए सामुदायिक आवाज

जम्मू-कश्मीर के बहू प्लाजा में, "गणतंत्र की आवाज - स्वच्छता के साथ" ने एक ऐसा मंच तैयार किया, जहां कला और संवाद के माध्यम से नागरिक जिम्मेदारी को अभिव्यक्ति मिली। इस खुले मंच पर कविता, संगीत और मौखिक प्रस्तुति का संगम हुआ, जिससे नागरिकों को देशभक्ति और सामुदायिक गौरव जैसे विषयों के साथ-साथ स्वच्छता पर अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिला।

इस आयोजन ने दिखाया कि कैसे जनभागीदारी औपचारिक अभियानों से आगे बढ़कर सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम से नागरिक मूल्यों को सुदृढ़ कर सकती है। सहभागिता और साझा स्वामित्व को प्रोत्साहित करके, इसने प्रदर्शित किया कि स्वच्छ आदत से स्वच्छ भारत का संदेश सामुदायिक आवाजों के माध्यम से कितना गहरा प्रभाव छोड़ सकता है।



पूर्वोत्तर भारत में युवाओं के नेतृत्व में सफाई अभियान

अरुणाचल प्रदेश में युवा स्वयंसेवकों ने सार्वजनिक स्थानों की साफ-सफाई की जिम्मेदारी संभाली है। इटानगर से शुरू होकर, युवाओं के समूहों ने उन क्षेत्रों की पहचान की जिन्हें नियमित देखभाल की आवश्यकता थी और उन्हें साफ करने के लिए एकजुट हुए। उनके प्रयासों से साझा परिवेश के प्रति स्वामित्व की बढ़ती भावना और सामूहिक कार्रवाई के माध्यम से उन्हें बेहतर बनाने की प्रतिबद्धता झलकती है।

इटानगर में शुरू हुआ यह अभियान जल्द ही नाहरलागुन, दोडमुख, सेप्पा, पालिन और पासीघाट सहित अन्य शहरों में फैल गया। बार-बार चलाए गए सफाई अभियानों और निरंतर भागीदारी के माध्यम से, इन युवा स्वयंसेवकों ने अब तक सार्वजनिक क्षेत्रों से 11 लाख किलोग्राम से अधिक कचरा हटाया है। इस प्रयास की व्यापकता और निरंतरता यह दर्शाती है कि निरंतर कार्रवाई किस प्रकार दृश्यमान और स्थायी परिवर्तन ला सकती है।

असम के नागांव कस्बे में, निवासियों का अपने मोहल्ले की गलियों से गहरा भावनात्मक जु़ड़ाव है। इन परिचित स्थानों को संरक्षित करने की आवश्यकता को समझते हुए, नागरिकों के एक समूह ने इन्हें साफ करने का साझा संकल्प लिया। जैसे-जैसे यह पहल गति पकड़ती गई, और भी लोग इसमें शामिल होते गए, जिससे एक समर्पित टीम बनी जिसने सड़कों से बड़ी मात्रा में जमा कचरे को सफलतापूर्वक साफ कर दिया।

ये सभी उदाहरण दर्शाते हैं कि स्वच्छ आदत से स्वच्छ भारत किस प्रकार दैनिक कार्यों के माध्यम से साकार होता है – जहाँ स्वच्छता को अलग-थलग अभियानों से नहीं, बल्कि बार-बार सफाई, साझा जिम्मेदारी और स्थानीय भागीदारी से बनी आदतों द्वारा कायम रखा जाता है।

जब आदत ही मिशन को आगे बढ़ाती है

विभिन्न क्षेत्रों में सामने आए अनुभव एक सरल लेकिन शक्तिशाली सत्य की ओर इशारा करते हैं: स्थायी परिवर्तन लोगों के दैनिक कार्यों से ही संभव होता है। यह नागरिकों द्वारा सार्वजनिक स्थानों का पुनर्दावा करना हो, युवा स्वयंसेवकों का बार-बार उन्हें गलियों में लौटना हो, या समुदायों द्वारा अपने मूल्यवान प्राकृतिक संसाधनों का पुनर्स्थापन करना हो, प्रगति तभी स्थायी होती है जब जिम्मेदारी असाधारण के बजाय नियमित हो जाती है।

जैसा कि ये कहानियां दर्शाती हैं, स्वच्छ आदत से स्वच्छ भारत की शक्ति किसी एक हस्तक्षेप में नहीं, बल्कि निरंतरता में निहित है। जब परिवेश की देखभाल दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन जाती है, तो परिणाम निरंतर निगरानी के बिना भी स्थायी हो जाते हैं। किसी कार्य को एक घटना के रूप में देखने के बजाय उसे एक सामान्य प्रक्रिया के रूप में देखने का यह सहज परिवर्तन, पहले से प्राप्त लाभों को बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने का मार्ग प्रशस्त करता है कि समुदायों, शहरों और पीढ़ियों में सुधार निरंतर जारी रहे।

संदर्भ

प्रधानमंत्री कार्यालय

https://www.pmindia.gov.in/en/major_initiatives/swachh-bharat-abhiyan/

<https://x.com/mannkibaat/status/2015298688718094590?s=20>

आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय

<https://x.com/SwachhBharatGov/status/2015304683552911533?s=20>

<https://x.com/SwachhBharatGov/status/2015324308542017671?s=20>

<https://x.com/SwachhBharatGov/status/2015723377202434493?s=20>

<https://x.com/SwachhBharatGov/status/2015683083845198289?s=20>

पीआईबी शोध

पीके/केसी/एनएम